परिशिष्ट - 2(अ)
(अब्दुल बिस्मिल्लाह के आत्मीय मित्र चंद्रदेव यादव का पत्र)

चन्द्रदेव यादव
नई दिल्ली
5/11/2001

प्रियवर भाऊसाहेब,

आपके दो पत्र मिलें । मैं आपकी मजबूरियाँ समझता हूँ, मगर ... दरअसल बात यह है कि शोध में व्यक्ति नहीं, कृति महत्त्वपूर्ण होती है, हालांकि वह व्यक्ति की ही रचना होती है । इसीलिए मैंने आपके पत्र का जवाब नहीं दिया । बहरहाल, आप जाननाही चाहते हैं तो कुछ बातें बिस्मिल्लाह साहब के बारे में बताता हूँ ।

मैं 1981 में बिस्मिल्लाह साहब के सम्पर्क में आया और धीरे-धीरे (यहाँ दिल्ली) आकर मैं उनके परिवार का सदस्य बन गया । इन बीस वर्षों में मैंने बिस्मिल्लाह साहब के अनेक रूप देखे और निस्संदेह उनमें साहस, धैर्य, प्रेम, भावुकता और उदारता महत्त्वपूर्ण हैं । यद्यपि उनमें विचलन और निराशा या अविश्वास की भी झलक कभी कभी दिख जाती है, जो मनुष्य होने के नाते अस्वाभाविक नहीं है, लेकिन उनका भावुक, किन्तु आशावादी रूप उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है ।

5' 8" या 9" के बिस्मिल्लाह साहब छरहरे बदन के व्यक्ति हैं । पहले हल्की पतली मूछों में, लेकिन अब क्लीन शेव वाले उनके चेहरेपर सुतवाँ लंबी नाक और घनी काली भौहों के नीचे पतली और सपनीली आँखों में धर्म-दर्शन और साहित्य की त्रिवेणी नातिवेग से बहती रहती है । बिस्मिल्लाह साहब धार्मिक नहीं है । पहले वे रोजा-नमाज का पालन करते थे, लेकिन अब वे ईद-बकरीद के अलावा नमाज नहीं पढ़ते । उन्होंने दुनिया के प्रमुख सभी धर्मग्रंथों का पारायण किया है और इसीलिए वे उनकी बारीकियों से परिचित हैं । यही हाल दर्शन को लेकर भी है । धर्म या दूसरी किसी भी चीज को वे वस्तुगत कसौटी पर कसते हैं और उसका मूल्यांकन करते हैं । इसीलिए कभी-कभी उनकी बातें जड कट्टरपंथियों को नागवार गुजरती हैं । सच ही

है - साँच को आँच क्या? दुनिया के साहित्य और संस्कृति से पूरी तरह वाकिफ बिस्मिल्लाह साहब ने विभिन्न क्षेत्रों की जिन्दगियों को निकट से देखा है और कुछ को भोगा भी है । इसीलिए उनका पर्यवेक्षण अत्यन्त सूक्ष्म और वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक है । तार्किकता उनके व्यक्तित्व का प्रधान गुण है ।

बिस्मिल्लाह साहब अब अक्सर कुर्ते-पाजामें में नजर आते हैं । सर्दियों में वे सूट पहनते हैं । अपने सहयोगियों, पडोसियों या दोस्तों के साथ ही नहीं, गैरों या अपरिचितों के साथ भी वे उसी तरह से मिलते हैं जैसे बरसों की जान-पहचान हो । कोई भी व्यक्ति दस-पाँच मिनट के अन्दर ही उनका आत्मीय हो सकता है, बशर्ते वह उनको समझने में कामयाब हो सकें । धार्मिक लोग उन्हें पसंद हैं, लेकिन कट्टर और रूढ़िवादी नहीं । मैंने कई बार रिक्शेवालों या दूसरे जरूरतमंदों को वस्त्रादि देकर उनका उपकार करते हुए देखा है । दूसरोंपर सहजही विश्वास करनेवाले बिस्मिल्लाह साहब को उनके विश्वासघात को भी झेलते हुए देखा है । लेकिन वे व्यक्ति और वस्तु के अद्‌भुत पारखी हैं । वे कई महत्त्वपूर्ण समितियों (सरकारी-गैरसरकारी) से जुडे हुए हैं, इसलिए कुछ लोग उनसे मिलकर अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं, मगर बिस्मिल्लाह साहब उन्हें बहुत आसानी से रास्ता दिखा देते हैं । बिस्मिल्लाह साहब अपने उसूलों को सख्ती से मानते हैं, इसलिए वे बिक तो सकते नहीं, अलबत जरूरत पड़ने पर दूसरों को जरूर बेच सकते हैं, क्योंकि वे केवल रचनाकार या चिंतक ही नहीं, मनुष्य होने के साथ-साथ एक चतुर और बौध्दिक बनारसी भी है । उनकी बुध्दि, तार्किकता और युक्तियों का लोग लोहा मानते हैं । वे एक कुशल रणनीतिकार हैं ।

बिस्मिल्लाह साहब अत्यन्त भावुक हैं । उनकी यह भावुकता कब उजागर हो जाएगी, कुछ कहा नहीं जा सकता । मैं उन्हें अमृतलाल नागर की मृत्यु पर रोते हुए देख चुका हूँ। अपने प्रिय और आत्मीय जनों के निधन पर ही नहीं, दूसरे अन्य प्रसंगों में भी मैंने उन्हें रोते हुए देखा है। गरीबी और बेबसी भुगत चुके बिस्मिल्लाह साहब की संवेदनाएँ गरीबों और असहायों से किस कदर जुड़ी हैं यह उपर्युक्त कुछ प्रसंगों के साथ साथ उनके साहित्य में आद्यन्त मौजूद है। अपनी कविता 'घर की चिट्‌ठी' का पाठ करते हुए वे अपने को रोक नहीं पाते और रो पड़ते हैं । यह कविता एक निरीह ग्रामीण औरत की पीडा और बेबसी के अलावा सांप्रदायिकता की पृष्ठभूमि पर आधारित है । आप समझ सकते हैं कि अब्दुल बिस्मिल्लाह को सांप्रदायिकता से

कितना दुराव और साम्प्रदायिकता के शिकार लोगों से कितना लगाव है । लेकिन भावविगलित कर देनेवाले और खुद हो जानेवाले यही अब्दुल बिस्मिल्लाह जगह जगह 'नए सूरज' की बात करते हैं जिसके उदय के लिए वे प्रतीक्षारत हैं । जाहिर है यह सूरज किसानों, मजदूरों और मजलूमों की जिन्दगी में प्रकाश भरनेवाला होगा, व्यवस्था का सूरज नहीं जो उनको सुखा डालता है ।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के अब्दुल बिस्मिल्लाह अपने प्रशंसकों से घिरे रहते हैं । उनके घर पर शाम को अक्सर साहित्य प्रेमियों की बैठकें होती हैं । उनके कई सारे दोस्त जो साहित्य के अलावा दूसरे अनुशासनों से जुड़े हैं, वे भी उनके व्यक्तित्व के आकर्षण से खिंचे चले आते हैं और साहित्य रस का चुपचाप आनंद लेते रहते हैं । उनकी वक्तृता लाजवाब है वे अत्यन्त सहज, धीर-गंभीर, किन्तु हँसमुख व्यक्ति हैं । कभी कभी उनकी उन्मुक्त हँसी देखते ही बनती है । वे 'आज' को बेहतर से बेहतर ढंग से जीने में विश्वास करते हैं । क्योंकि कल क्या होगा, कौन जानता है । उन्हीं का एक दोहा है -

हार जीत का ठीक नहीं है, अजब सफर का खेल ।
ना जाने किस टेसन जाकर रूक जाए ये रेल ।।

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक पूरी किताब हैं, एक छोटा-सा लेख या संस्मरण नहीं । इसलिए बस ।

आशा है, इतने से आपका काम चल जाएगा ।

आपका,

(चंद्रदेव यादव)

परिशिष्ट - 2 (आ)

चन्द्रदेव यादव
नई दिल्ली
16/7/2001

प्रियवर भाऊसाहेब,

आपका पत्र मिला । खुशी हुई । यह जानकर और भी खुशी हुई कि मेरी पुस्तक से आपको बहुत मदद मिल रही है । जहाँ तक 'मुखड़ा क्या देखे' का सवाल है, उस पर प्रकाशित कुछ समीक्षाओं के अतिरिक्त कोई विशेष सामग्री नहीं है । मैं उसे भेजने की कोशिश करूँगा ।

बिस्मिल्लाह साहब को भी आपने पत्र भेजा है । उन्होंने भी मुझे इसी पत्र में जवाब लिखने को कहा है । उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित कई शोध कार्य हुए हैं । कुछ शोध ग्रंथ उनके पास हैं । आप समय निकाल कर दो-एक दिन के लिए दिल्ली आ जाएं और उन शोध ग्रंथों का अवलोकन कर लें ।

'जहरबाद' मराठी में अनूदित तो हुआ है, मगर पुस्तकाकार प्रकाशित नहीं हुआ है। वह जिस मराठी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है उस पत्रिका का नाम और विवरण निम्नवत है:

पत्रिका का नाम - चंद्रकांत, दिवाली अंक, 1985
जहरबाद का अनूदित शीर्षक - उध्वस्त संसार,
अनुवादक - रमेश देशपांडे

बाकी सब ठीक है ।
आशा है आप स्वस्थ सानंद होंगे ।

आपका,

(चंद्रदेव यादव)

पुनश्च: 'मुखड़ा क्या देखे' की एक समीक्षा भेज रहा हूँ ।

परिशिष्ट - ३(अ)

अब्दुल बिस्मिल्लाह

29. 12. 2000

प्रियवर,

तुम्हारा 25. 11 का पत्र सामने है।
मुझे लगता है कि इसका उत्तर मैंने नहीं भेजा है व्यस्तताओं के चलते विलम्ब भी हो गया।
खैर...
मेरे पाँच उपन्यास हैं। उन सबको अगर आधार बनाओगे तो क्या विषय काफ़ी बड़ा नहीं हो जाएगा? एम. फ़िल्. का लघु शोध प्रबंध है, किसी एक उपन्यास पर भी हो सकता है, बहरहाल, तुम तो अपने शोध-निर्देशक की राय पर ही चलो।
मेरे कथा-साहित्य पर एक पुस्तक है, जिसका सम्पादन डॉ. चन्द्रदेव यादव ने किया है। वे मेरे ही विभाग में प्राध्यापक हैं। तुम उन्हें पत्र लिख कर वह पुस्तक VPP द्वारा मँगा सकते हो उससे तुम्हें काफ़ी मदद मिलेगी।
सभी शाखाओं की सूचना दे पाना तो कठिन है, क्योंकि उनकी संख्या बहुत अधिक है और वे कहाँ रखी हैं, पता नहीं। कभी दिल्ली आना होगा, तो देखेंगे।
तुम्हारा शोध-कार्य भलीभाँति सम्पन्न हो, मेरी शुभकामनाएँ।
अपने शोध-निर्देशक डॉ. अर्जुन चव्हाण जी को मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हारा

हिन्दी विभाग
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6831717/349

29, मुजीब बाग़
जामिआ मिल्लिया कैम्पस
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6849471

परिशिष्ट - ३(आ)

अब्दुल बिस्मिल्लाह

२०.८.००१

प्रियवर,

पत्र मिला। साथ में एक प्रश्नावली भी।
इस सम्बंध में मुझे दो बातें कहनी हैं:

1. शोध आप मेरे साहित्य पर कर रहे हैं, न कि जीवन पर। इसलिए जीवन का पक्ष छोड़ दें: यदि संभव हो।
2. अगर जीवन को जानना ज़रूरी है तो प्रश्नावली से काम नहीं चलेगा। आपको दिल्ली आना होगा। यहाँ बातचीत के ज़रिए ही आप उसे ठीक से जान सकेंगे।

यहाँ काम का इतना बोझ है, इतनी व्यस्तताएँ हैं, कि पत्र द्वारा इतनी सूचनाएँ मैं नहीं दे पाऊँगा।

हाँ, यह बता दूँ कि दिल्ली-यात्रा के लिए आपको विश्वविद्यालय से धनराशि मिल सकती है; क्योंकि आप अपने शोधकार्य के उद्देश्य से आएँगे।

आशा है, आप स्वस्थ-सानन्द होंगे।

आपका

हिन्दी विभाग
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6831717/349

29, मुजीब बाग़
जामिआ मिल्लिया कैम्पस
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6849471

अब्दुल बिस्मिल्लाह

परिशिष्ट - ३(इ)

२४.१०.००।

प्रियवर,

तुम्हारा पत्र मिला।
प्रश्नावली पहले ही मिल गई थी।
कुछ प्रश्नों के उत्तर भेज चुका हूँ।
दो लिफ़ाफ़ों में।
क्या वे नहीं मिले?
आशा तो यही है कि अब तक मिल गए होंगे; या फिर मिल जाएंगे।
तीसरा लिफ़ाफ़ा जल्दी ही तुम्हें मिल जाएगा। सोमवार को पोस्ट करूंगा।
चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।
मैं यथासम्भव सहयोग करूंगा।
अपने लघु शोध-प्रबंध की एक प्रति मेरे पास भेजना न भूलना। इससे शोधार्थियों को मदद मिलती है।
आशा है, सानन्द-प्रसन्न होंगे।

तुम्हारा

[signature]

हिन्दी विभाग
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6831717/349

29, मुजीब बाग़
जामिआ मिल्लिया कैम्पस
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6849471

Abdul Bismillah **परिशिष्ट - ३(ई)** 10. 11. 001

प्रियवर,

इस बीच आपके तीन पत्र मिले हैं। एक पत्र में आपने मेरे उत्तरों के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण की माँग की है। यह संभव नहीं है। मुझे जो कहना था, कह दिया।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास पर मुझे 'वीरसिंह देव' पुरस्कार मिला है। अखबार में 'मुक्तिबोध पुरस्कार' गलती से छप गया है। मुझे पुरस्कार मिलने पर आपको खुशी हुई, इसके लिए आभार! आपके अंतिम पत्र का उत्तर भी मैंने भेज दिया है। आशा है, अब तक मिल गया होगा।

आशा यह भी है कि डॉ. चन्द्रदेव यादव का पत्र भी आपको मिल गया होगा।

आदरणीय नामवर जी से आपकी बातचीत हुई, यह बहुत अच्छा रहा।

अब आपसे यह आशा है कि अपने लघु-शोध-प्रबंध की एक प्रति मेरे पास अवश्य भेजेंगे।

आप Ph. D. किस विषय पर करेंगे, यह भी मुझे बतायें!

शेष शुभ_

आपका

[signature]

दीपावली की शुभकामनाएँ

Hindi Department,
Jamia Millia Islamia,
New Delhi-110025
Ph. : 6831717/349

29 Mujeeb Bagh
Jamia Millia Campus
New Delhi 110025
Ph. : 6849471

अब्दुल बिस्मिल्लाह **परिशिष्ट - ३(उ)**

22.11.001

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। साथ में एक और प्रश्नावली। शोध में इस तरह के प्रश्नों का क्या महत्व है, यह मैं आज तक नहीं समझ पाया। खैर... मैंने डी. फिल्. सन् 1979 में किया था। विषय था:

'मध्यकालीन हिन्दी काव्य में सांस्कृतिक समन्वय' यह पुस्तक 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद' से प्रकाशित है।

अन्य प्रश्नों के लिए आप डॉ. चन्द्रदेव यादव को लिखें।

सानन्द होंगे।

आपका

हिन्दी विभाग
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6831717/349

29, मुजीब बाग
जामिआ मिल्लिया कैम्पस
नई दिल्ली–110025
दूरभाष : 6849471